Ñ".kk vfXugks=h ds miU;klksa esa ukjh psruk % ,d v/;;u

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच० डी० उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

ekufodh ladk;

fgUnh foHkkx

2024

'kks/k funsZf'kdk

डॉ० eatq yky

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

डोरण्डा महाविद्यालय, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

'kks/kkFkhZ

lq"kek eq.M

राँची विश्वविद्यालय, राँची

मो० न० : 8709808302

Ñ".kk vfXugks=h ds miU;klksa esa ukjh psruk % ,d v/;;u

1- 'kks/k fo"k; dk ifjp;@iLrkouk@Hkwfedk

उपन्यास हिन्दी साहित्य का जीवंत रूप है सामयिक जीवन की बहुमुखी विविधता और जटिलताओं का समग्र चित्रण करने में इसने अद्‌भुत सफलता पाई है। उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं बल्कि युगीन चेतना को सम्प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है। स्वतंत्रता पूर्व उपन्यास लेखन में नारी की उपस्थिति नगण्य प्रायः थी। इस क्षेत्र में पुरूष का आधिपत्य था। लेकिन स्वतंत्रता के बाद स्त्रियों की परम्परा पाई जाती है। नवजागरण के फलस्वरूप नारी की चेतना जागृत हो गई थी। उसने अपने हो रहे शोषण को पहचाना और प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसका प्रतिकार करना भी प्रारंभ कर दिया था। इनका रचनात्मक बोध नवीन मूल्यों को लेकर चला, इसी युगीन चेतना के सत्य को सशक्त रूप से प्रस्तुत करनेवाली लेखिका हैं श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री जी जिनका सम्पूर्ण जीवन शोषण और संघर्ष के बीच गुजरा था।

कृष्णा अग्निहोत्री वर्तमान युग में हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सबसे अधिक चर्चित महिला एवं साहित्यकार रही हैं। हिन्दी समीक्षकों की दृष्टि से कृष्णा अग्निहोत्री केवल नारी विमर्श की रचनाकार न रहकर अखिल मानव जीवन की सही व्याख्या प्रस्तुत करने वाली एक श्रेष्ठतम रचनाकार है। इन्हीं विचारों की झलक उनके उपन्यासों में देखने को मिलती है।

साहित्य और समाज का पारस्परिक अंतर्सम्बन्ध होता है। साहित्य समाज का अनुसरण करता है और समाज साहित्य से प्रेरणा ग्रहण करता है। स्वातंत्र्योत्तर समाज में नारी हर क्षेत्र में पुरूष से कंधे से कंधा मिलाकर अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है। समकालीन परिदृश्य का एक महत्त्वपूर्ण आयाम था। महिला लेखन जिसके अन्तर्गत कृष्णाजी के उपन्यासों का मूल प्रतिपाद्य भले ही नारी शोषण ही रहा हो लेकिन वह नारी मुक्ति की चेतना से अछूता नहीं रहा। कथ्य एवं वैविध्य की दृष्टि से इनके उपन्यास बहुआयामी हैं। कृष्णा जी की नायिकाएँ शोषण को नियति मानकर मूक नहीं रहती बल्कि प्रतिकार करने का साहस भी दिखाती है। परपंरागत रूढ़ियों को तोड़कर नए प्रतिमान भी रचती हैं और अपनी पहचान भी बनाती हैं।

अपनी मूलभूत स्वतंत्रता का अधिकार आज की नारियों की पहली शर्त्त है। 'नारी न तो देवी है न राक्षसी, रक्त मांस से बनी मानवी', उसे भी संयुक्त जीवन जीने का पूरा अधिकार है।

हिन्दी साहित्य जगत के विख्यात कथाकार कृष्णा अग्निहोत्री का जन्म 8 अक्टूबर 1934 में राजस्थान स्थित नसीराबाद में हुआ था। कृष्णा अग्निहोत्री को 'रत्न भारती पुरस्कार', 'अक्षरा सम्मान' सहित कई राष्ट्रीय एवं पंजाब, हरियाणा, बिहार, मध्यप्रदेश और राजस्थान से कई राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान मिल चुके हैं। फिलहाल वे इंदौर में रहकर साहित्य की सेवा कर रही हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में साठोत्तरी महिला कथाकारों में चर्चित कथाकार कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी चेतना को देखा जा रहा है। लेखिका ने जो कुछ समाज में देखा, भोगा तथा अनुभव किया उसको अपनी उपन्यासों में विविध नारी पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जिसमें उसके नारी पात्र कहीं संस्कारों में बंधे दिखते हैं, कहीं अन्याय को चुपचाप सहते हैं, कहीं परिस्थितियों से समझौता करते हैं तो कहीं अन्याय का डटकर सामना भी करते हैं। जैसे –

'बात एक औरत की' इस उपन्यास की नायिका कनु अपने जीवन में निरंतर अमानवीय परिस्थितियों का शिकार होती है। पति द्वारा प्रताड़ित भी की जाती है लेकिन वह साहसिक कदम उठाते हुए पति से सम्बन्ध विच्छेद कर लेती है। वह हर परिस्थिति का सामना करती है लेकिन हार नहीं मानती है।

कृष्णा जी का दूसरा उपन्यास 'टपरेवाले' बस्तर जिले की पिछड़ी जनजातियों के जीवन का प्रभाविक दस्तावेज हैं। इस उपन्यास की नायिका लीला है। जो उच्च जाति के युवक से प्रेम करती है और उसकी संतान को जन्म देने का साहस भी करती है। यह उपन्यास उपेक्षित जातियों के जीवन संघर्ष को समग्रता में प्रस्तुत करता है। लीला इस उपन्यास में आत्म–निर्भर होकर बच्चे का उत्तरदायित्व अकेले ही निभाने का संकल्प कर समुदाय के लिए आदर्श बन जाती है।

इनका अगला उपन्यास 'कुमारिकाएँ' अविवाहित, पति परित्यक्ता, विधवा नारियों के जीवन की त्रासदी को उसकी सच्चाई के साथ प्रस्तुत करता है। कुमारिकाएँ की वंदना अपनी

असहाय परिस्थिति को इस तरह व्यक्त करती है – मैं नौकरी करती हूँ। मकान, बिजली, पानी का खर्च देखती हूँ, लेकिन किसी से अपनत्व मिलता है तो मैं उसकी रखैल बन जाती हूँ।

'अभिषेक' का केनवास अपने आप में कुछ अलग मुद्दों को लेकर चला है। इन्होंने नारी शोषण से इतर जातिवाद के विद्रोह में कलम चलाई है। इस उपन्यास में भारत के अलावा विदेशों में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

'निष्कृति' उपन्यास के माध्यम से मीरा व जोधा के चरित्र से समाज में शोषित व पीड़ित नारियों की आवाज उठाने का प्रयास किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री अपने उपन्यास 'नीलोफर' में वे दिखाती हैं कि आदिवासी युवती नथनी से लेकर अमेरिका की नीलम तक नारी के अपमान और उत्पीड़न की श्रृंखला एक ही है। उनके स्वयं के अनुभवों और लम्बे जीवन–संघर्षों का निचोड़ भी है।

'आना इस देश' एक लघु उपन्यास है। यह उपन्यास भारत–पाक विभाजन की मानसिकता को लेकर चलती है। इस उपन्यास की नायिका सुरैय्या है। पति के क्रूर स्वभाम के कारण वह बहुत ही दुखित है।

2 'kks/k dk;Z dh izsj.kk@ikDdYiuk

स्वतंत्रता के बाद की महिला कथाकारों में कृष्णा अग्निहोत्री ने नारियों की दयनीय दशा को अपने उपन्यासों में पिरोने का साहस किया है। उनके उपन्यासों में यौन–शोषण, नारी–उत्पीड़न, जातिवाद आदि का चित्रण किया गया है। वर्त्तमान समय में देखा जाय तो समाज, राष्ट्र, धर्म आदि के प्रति देखने का नजरिया बदला है। मनुष्य यंत्रवत जीवन जी रहा है, आपसी द्वेष मतभेद बढ़ते जा रहे हैं। नारियों को हर क्षेत्र में प्रताड़ना मिलती है। चूँकि मैं स्वयं भी एक नारी हूँ। मुझे भी अपने समाज या पारिवारिक जीवन हो या अन्य जगहों पर हर तरह की असुविधाओं को झेलना पड़ता है। जब मैंने कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों को पढ़ा तो मुझे वहाँ से प्रेरणा मिली तभी मैंने नारी विषयक कुछ विशेष तथ्यों को लेकर खोज करना प्रारंभ कर दी और मैंने 'नारी चेतना एवं अधिकार सजगता : एक अध्ययन' की ओर अपना ध्यान आकृष्ट किया। इस कार्य को करने में मैं अपनी शोध निर्देशिका के द्वारा प्रोत्साहित हूँ।

3 'kk/k dk mÌ';

एक स्त्री होने के नाते मेरे मन में हमेशा यह जिज्ञासा बनी रहती थी कि 'स्त्री कौन है?', ' इस समाज में स्त्री का क्या स्थान है?', 'वैयक्तिक तथा सामाजिक स्तर पर स्त्री का अस्तित्व कया है?' मेरे अंतर्मन में हमेशा यह इच्छा थी कि इस विषय के बारे में गहन रूप से मैं अध्ययन करूँ इसलिए मैंने कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में शोण करने का निर्णय लिया और अपना शोध विषय ''कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी चेतना एवं अधिकार सजगता'' को चुना।

कृष्णा अग्निहोत्री अपनी उपन्यासों में निरंतर पुरूष वर्चस्व के विरूद्ध नारी के स्वाभिमान और संघर्ष के पक्ष में खड़ी है। इनके उपन्यासों के माध्यम से मैंने सदियों से दबी या शोषित स्त्री की चेतना को जानने की कोशिश की है। यह भी जानने का प्रयास किया है कि आखिर कब तक स्त्रियों को समाज में न्याय मिलेगा। इन्हीं सभी बातों का विश्लेषण और विवेचन कर मैंने नारी चेतना की सार्थकता को न्याय दिलाने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से भी यह शोध परख अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

4 iloZ v/;;u ,oa 'kk/k dk;Z

इस शोध विषय से संबंधित कई शोध किए जा चुके हैं। उन्हें पढ़ने के उपरांत ही मैंने अपने शोध विषय का चयन किया है जिनका विवरण इस प्रकार है –

1 ''कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' प्रिया सुनील, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

2 ''कृष्णा अग्निहोत्री के साहित्य में नारी यंघर्ष'' दीपिका शर्मा, जम्मू विश्वविद्यालय

3 ''कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास में नारी शक्ति : एक अध्ययन'' हस्ना खानम, बैंगलूरू विश्वविद्यालय

5 lkfgR; voyksdu

बाल्यकाल से ही कृष्णा अग्निहोत्री साहित्य लेखन के प्रति रूझान रखती थी। प्रेमचंद, यशपाल, शरतचन्द्र के साहित्य ने इन्हें बहुत प्रभावित किया था। इनका वैवाहिक जीवन असफल रहा जो हमेशा संघर्ष ओर चुनौतियों से जूझता रहा। प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच इनकी दबी हुई साहित्यक प्रतिभा भी उभरने लगी थी। व्यक्तिगत जीवन के दुःख, प्रताड़ना, घुटन, संघर्ष और विद्रोह उनकी लेखनी में स्थान पाने लगे। भोगे हुए यथार्थ के अभिव्यक्ति के कारण इनकी रचनाओं मं तीखापन आ गया था। नारी का अभिशप्त जीवन और उसकी अस्मिता की तलाश, संघर्ष और विद्रोह उसकी अंतहीन लड़ाई और कभी भी हार न मानने वाली अदम्य जिज्ञासा उसके साहित्य में रूपायित होने लगा।

6 'kk/k fo"k; dh iklfxdrk

कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास साहित्य जगत में जितनी प्रासंगिक है सामाजिक अध्ययन की दृष्टि से यह अत्यंत पमत्त्वपूर्ण है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में नारी को ही मुख्य केन्द्र बिन्दु माना है। अब वह नारी जो अब पुरूष की पाश्विका बनकर नहीं रहना चाहती, किन्तु उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ना चाहती है। इन्होंने उपन्यास के माध्यम से नारी को ऊपर उठाने का प्रयास किया है इसलिए मेरे विचार से यह प्रस्तावित शोध–कार्य भविष्य के अन्य शोधकत्ताओं के लिए प्रेरणादायी अवश्य बने। इस दृष्टि से इसकी उपादेयता और प्रासंगिता सिद्ध होगी।

7 शोध कार्य का महत्त्व

भारतीय नारी के बारे में मैथलीशरण गुप्त का विचार इस प्रकार है –

**vcyk thou gk;A r|Egkjh ;g dgkuh

vkpy e: g! n/k] vk|[kk: e: ikuhAA**

आज भी नारी को चाहे पिता हो, पति हो या बेटा हो हमेशा उनके अधीन रहना पड़ता है। इस वजह से मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या नारी को स्वतंत्रता मिली है? यही कारण है कि मैंने अपना शोध प्रबंध नारी चेतना एवं अधिकार सजगता को लेकर पसंद किया है। मैं खुद भी एक नारी हूँ और एक नारी ही नारी की भावना को समझ सकती है, महसूस कर सकती है। इसलिए ''कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी चेतना एवं अधिकार सजगता : एक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य करना मुझे उचित लगा।

8 'kk/k dk;l dh v/;;u i)fr@ifof/k@ vfHkdYi

क. आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति

ख. लेखों/आलेखों के अध्ययन से

ग. सहायक सामगी, पुस्तकावलोकन

ध. पुस्तकालय अवलोकन

ड. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

च. साक्षात्कार विधि

9 'kk/k dk;l Kku foLrkj e: i:;kx@ i{;

हिन्दी साहित्य में अनेक लेखिकाएँ साहित्य सृजन में अपना योगदान करती है। उसमें वर्त्तमान काल में शिक्षित नारी का कार्य क्षेत्र बढ़ गया था। उसमें अधिकार प्राप्ति की भावना को बल मिला है, फलस्वरूप स्वतंत्र्योत्तर की लेखिकाओं के साहित्य में परिवर्त्तित मान्यताओं आदि का चित्रण होने लगा है। इसमें कृष्णा अग्निहोत्री का नाम विशेष रूप से लेना होगा। मैं

तो ऐसा ही बोलूँगी कि ''कृष्णा अग्निहोत्री का साहित्य, नारी–जीवन का दस्तावेज है।'' जिन्होंने नारी की विविध समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पर हुआ शोध कार्य ज्ञान विस्तार में सहायक होगा।

10 Hkkfo"; esa 'kks/k dk;Z gksus dh laHkkouk,¡

जब मैंने इस विषय से संबंधित शोध कार्य को तलाश करने का प्रयास किया तब मुझे पता चला कि इस विषय पर अनुसंधान की काफी गुंजाइश है। क्योंकि इस विषय पर शोध कार्य बहुत ही कम हुए हैं। इस दृष्टि से मैंने ''कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी चेतना एवं अधिकार सजगता : एक अध्ययन'' विषय को चुना।

11 'kks/k dh lhek,¡@ v/;k;

Ñ".kk vfXugks=h ds miU;klksa esa ukjh psruk % ,d v/;;u

izLrkouk

v/;k; 1 Ñ".kk vfXugks=h dh thou ifjp;

क. कृष्णा अग्निहोत्री का व्यक्तित्व

ख. कृष्णा अग्निहोत्री की रचनाएँ

ग. कृष्णा अग्निहोत्री के पुरस्कार एवं सम्मान

v/;k; 2 fgUnh miU;klk dk mnHko ,o fodkl

क. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास

ख. प्रेमचंद कालीन हिन्दी उपन्यास

ग. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास

v/;k; 3 Ñ".kk vfXugk=h d miU;klk e ukjh pruk

क. परिवार के प्रति समर्पण

ख. सामाजिक प्रतिष्ठा

ग. वर्तमान परिस्थितियों में नारी चेतना का विकास

v/;k; 4 Ñ".kk vfXugk=h d miU;klk e ukjh dh vf/kdkj ltxrk

क. अपने स्वधिकार के प्रति सजगता

ख. राष्ट्र और समाज के प्रति अधिकार सजगता

ग. वर्त्तमान परिस्थिति में जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा

v/;k; 5 Ñ".kk vfXugk=h d miU;klk dh Hkk"kk

क. कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में भाषागत विशेषताएँ

ख. ठेठ गंवई शैली, देशज, विदेशज, अंग्रेजी भाषा का प्रयोग

ग. मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग

ध. प्रतीकों का प्रयोग

mi lagkj % fof'k"V miU;kl dkj Ñ".kk vfXugks=h ,d eY;kdu

l anHkZ xzFk

क. आधार ग्रंध सूची

ख. सहायक ग्रंध सूची

ग. पत्र–पत्रिकाएँ

ukV : **अत्यावश्यक होने पर विषय सूची में आंशिक परिवर्त्तन संभव है।**

d- vk/kkj xa/k& lwph

1 ’बात एक औरत की’ – 1974 इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली

2. ’टपरेवाले’ – 1976 पराग प्रकाशन

3 ’कुमारिकाएँ’ – 1978 इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन

4. 'अभिषेक' – 1984 पंचशील प्रकाशन

5. 'निष्कृति' – 1987 पंचशील प्रकाशन

6. 'नीलोफर' – 1988 नेशनल पब्लिशिंग हाऊस

7. 'आना इस देश' – 2014 अमन प्रकाशन कानपूर

[k- lgk;d xFk lph

1. वर्तमान परिवेश व राष्ट्रीय चिंतन, कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संसकरण 2016
2. नारी चेतना के आयाम – डॉ0 अलका प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2007
3. इतिहास में स्त्री अस्मिता की तलाश – नीलिमा पाण्डे, अध्ययन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018
4. स्त्री प्रश्न – नमिता सिंह, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2017
5. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी व कहानीकार – कृष्णा अग्निहोत्री, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2019
6. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवता – डॉ0 नवल, किशोर प्रकाशन, दिल्ली 1977
7. हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग – डॉ0 त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी 1973
8. और–और–औरत – कृष्णा अग्निहोत्री, सामयिक बुक्स, दूसरा संस्करण 2011
9. महिला अधिकार – ममता मेहरोत्रा, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रथम संस्करण 2014
10. स्त्री अस्मिता के सवाल – डॉ0 प्रभा दीक्षित, साहित्य नियल प्रकाश, प्रथम संस्करण 2011

11. नारी प्रश्न – सरला महेश्वरी, राधाकृष्ण प्रकाशन 2007

12. स्त्री संघर्ष का इतिहास – राधा कुमार, वाणी प्रकाशन 2011

x- i=&if=dk,¡

1. हंस पत्रिका – राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली 1986
2. पहल पत्रिका – ज्ञानरंजन
3. आजकल पत्रिका – प्रवीन कुमार उपाध्याय दिल्ली 1945
4. नया ज्ञानोदय – रविन्द्र कालिया
5. शब्द ब्रह्म – अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
6. www. शोधगंगा
7. वेब सामग्री

fVIi.kh % mi;ä rF; iFke ,o vfre ugh gA

'kk/k funf'kdk

डॉ० मंजुलाल

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

डोरण्डा महाविद्यालय, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

'kk/kkFkh

I"kek e.M

राँची विश्वविद्यालय, राँची

मो०न० : 8709808302